विचार बिन्दु

मनुष्य जीवन अनुभव का शास्त्र है। –विनोबा

गरीबी से बड़ा कोई अभिशाप नहीं. इससे मुक्ति दिलाने में शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण से बेहतर कोई उपाय नहीं

मेरा जीवन एक साधारण गाँव में शुरू हुआ, जहाँअकूत गरीबी थी। मेरे पिता प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे और मैं प्राय: उनको इस संघर्ष में देखता था कि कैसे वे एक ओर अपने विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते थे और दूसरी ओर सरकारी अफसरों और नेताओं से हाथ जोड़कर अपने पदस्थापन स्थान के विकास के लिए याचना करते थे। मैंने तब इस बात को स्वयं जिया कि कैसे गरीबी न केवल जीवन की गुणवत्ता को कम करती है, बल्कि यह व्यक्ति की आत्मा को भी छलनी कर देती है। इस अभिशाप से मुक्ति पाने की छटपटाहट में मैंने शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण के महत्व को आत्मसात और क्रियान्वित किया।

शिक्षा ने मेरे लिए विश्व के बंद दरवाजे खोले। शिक्षा मेरे लिए ज्ञान की वह रोशनी लेकर आई, जिसने मुझे अपनी स्थितियों को समझने और उन्हें बदलने की रणनीति और शक्ति दी। स्वास्थ्य ने मुझे यह सिखाया कि एक स्वस्थ शरीर में ही एक स्वस्थ और निर्मल मन निवास करता है, और यही निर्मल मन व्यक्ति के समग्र कल्याण का बीज है। शांति ने मुझे आंतरिक संतुलन और सामंजस्य के चमत्कारी प्रभाव को समझाया, जो हमारे भीतर सहयोग और सद्भावना को बढ़ाता है। हमारे आसपास का पर्यावरण और उसको बेहतर रखने के प्रति सचेत रहने से मुझे यह समझ पाना सुलभ हुआ कि प्राकृतिक संसाधन हमारे जीवन केमूल आधार हैं, और इनकी सुरक्षा करना हमारी असल में हमारी अपनी भलाई के लिए अनिवार्य है।

इस प्रकार, मेरी कहानी आपको यह सिखा सकती है कि गरीबी से लड़ने और विजय पाने हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण को साथ लेकर चलना होगा। ये चारों स्तंभ व्यक्तिगत जीवन के साथ ही समग्र समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। जब हम इन स्तंभों को सशक्त बनाते हैं, तो हम न केवल गरीबी के विरुद्ध एक प्रबल लड़ाई लड़ सकते हैं, बल्कि एक ऐसे समाज की नींव रख सकते हैं जो अधिक समृद्ध, स्वस्थ और शांतिपूर्ण हो।

अपनी जीवन यात्रा मेंमैंने यह भी सीखा कि जब समाज एक साथ मिलकर काम करता है, तो बदलाव लाना तुलनात्मक रूप से शीघ्रतापूर्वक संभव हो पाता है। शिक्षा के माध्यम से युवाओं को सशक्त बनाना, स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ बनाना, शांति की दिशा में काम करना और पर्यावरण की रक्षा करना–ये सभी कार्य तब और अधिक प्रभावी होते हैं जब हम सभी इसमें साझा प्रयत्न करते हैं। मेरी कहानी यह भी दर्शाती है कि गरीबी एक बड़ी चुनौती है, लेकिन इसे पराजित करने के लिए हमारे पास शक्तिशाली रणनीतियाँ उपलब्ध हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति, और पर्यावरण के माध्यम से हम व्यक्तिगत जीवन को बेहतर बना सकते हैं, और साथ ही पूरे समाज और राष्ट्र को भी उन्नति की ओर ले जा सकते हैं। इस दिशा में मिल–जुलकर किया गया कार्य एक ऐसे भविष्य की ओर ले जा सकता है जहाँ गरीबी मात्र इतिहास का हिस्सा बन कर रह जाए।

शिक्षा का महत्व तो जगजाहिर है। यह व्यक्ति को न केवल ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि उसे आत्मनिर्भर बनाने में भी सहायक होती है। एक अनपढ़ व्यक्ति जो अपने अधिकारों से अनभिज्ञ होता है, उसे प्राय: शोषण का सामना करना पड़ता है। जब वही व्यक्ति शिक्षित हो जाता है, तो वह न केवल अपने अधिकारों की रक्षा कर सकता है, बल्कि अपने जीवन की बेहतरी हेतु सही निर्णय ले सकता है। उदाहरण के लिए, एक छोटे गाँव की एक युवती जिसने शिक्षा प्राप्त की और अपने गाँव में एक स्कूल खोला, उसने अपना जीवन तो बदला ही साथ ही अपने गाँव के बच्चों को भी शिक्षित करने का मार्ग प्रशस्त किया।

शिक्षा के साथ ही स्वास्थ्य भी गरीबी से मुक्ति का एक अनिवार्य साधन है। बीमारियों से मुक्त एक स्वस्थ व्यक्ति अपने कार्य में अधिक सक्षम होता है और तुलनात्मक रूप से अधिक आय अर्जित कर सकता है। इसके उलट, एक बीमार व्यक्ति अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं कर सकता, जिससे उसकी आर्थिक स्थिति दुष्प्रभावित होती है। स्वास्थ्य सेवाओं का सुलभ होना और उनकी गुणवत्ता दोनों ही महत्वपूर्ण है। एक स्वस्थ समाज ही एक समृद्ध और सुखी समाज की नींव रख सकता है। एक छोटे गाँव में, जहाँ पहले स्वास्थ्य सेवाएं नहीं थीं, वहाँ एक स्वास्थ्य केंद्र की स्थापना से न केवल बीमारियों का बेहतर प्रबंधन हुआ, बल्कि लोगों की जीवन गुणवत्ता में भी सुधार हुआ।

शिक्षा और स्वास्थ्य के साथ ही शांति भी गरीबी से मुक्ति का एक अनिवार्य घटक है। एक शांतिपूर्ण समाज में, व्यक्तियों, परिवारों और समाज को अपनी क्षमताओं को विकसित करने और आर्थिक अवसरों का लाभ उठाने के बेहतर अवसरप्राप्त होता है। जिस समाज में हिंसा और अशांति होती है उसमें सतत विकास की संभावनाएं घट जाती हैं और गरीबी बढ़ती जाती है। फलत:, शांति को बढ़ावा देना और आपसी संघर्षों को कम करना गरीबी से मुक्ति के लिए अनिवार्य है।

> **शिक्षा का महत्व तो जगजाहिर है। यह व्यक्ति को न केवल ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि उसे आत्मनिर्भर बनाने में भी सहायक होती है। एक अनपढ़ व्यक्ति जो अपने अधिकारों से अनभिज्ञ होता है, उसे प्रायः शोषण का सामना करना पड़ता है। जब वही व्यक्ति शिक्षित हो जाता है, तो वह न केवल अपने अधिकारों की रक्षा कर सकता है, बल्कि अपने जीवन की बेहतरी हेतु सही निर्णय ले सकता है।**

गरीबी को मिटाने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, और शांति के साथ–साथ पर्यावरण का संरक्षण भी अत्यंत आवश्यक है। पर्यावरणीय स्थिरता से हमारे संसाधन सुरक्षित रहते हैं, जो कि सतत आर्थिक, सामाजिक और पारिस्थितिकीय विकास और लोगों के कल्याण में मौलिक भूमिका निभाते हैं। जब पर्यावरण संरक्षित होता है, तो यह खाद्य सुरक्षा में योगदान देता है, प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव को कम करता है, और स्वच्छ जल, वायु और मृदाप्रदान करता है। इस प्रकार,पर्यावरणीय स्थिरता प्राकृतिक पारिस्थितिकीय तंत्रों के साथ ही मानव समाज के स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिरता के लिए भी अनिवार्य है। इसलिए, गरीबी उन्मूलन की हमारी रणनीतियों में पर्यावरणीय संरक्षण को भी प्रमुख स्थान देना चाहिए। प्राकृतिक जलवायु समाधान जिसमें कार्बन पृथक्करण और संचय, जैव–विविधता का संरक्षण, और आजीविका में सुधार शामिल हैं, एक ऐसा रास्ता देते हैं जो गरीबी उन्मूलन के लिए आवश्यक संसाधनों का सुदृढीकरण भी करते हैं।

इन चारों स्तंभों – शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण – को सुदृढ़ करने से ही गरीबी के चक्र को तोड़ा जा सकता है और एक समृद्ध समाज की नींव रखी जा सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि सरकारें और समाज के सभी वर्ग इन क्षेत्रों में प्राथमिकता से निवेश करें। इन मूलभूत कारकों को सम्हाली बिना गरीबी के विरुद्ध एक प्रभावी और निर्णायक लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती।

यदि एक देश अपने बच्चों और नागरिकों को उच्चकोटि की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पर्यावरणीय सुरक्षा, और शांतिपूर्ण जीवन नहीं दे सकता, तो वास्तव में उसके पास देने के लिए और क्या बचता है? ये सभी तत्व न केवल एक समृद्ध समाज की नींव हैं, बल्कि ये हर व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण हैं। एक व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के रूप में हमारी प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि हम इन मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करें और अपने नागरिकों को एक सुरक्षित, स्वस्थ, और शिक्षित भविष्य प्रदान करें।

इसी विश्वास के साथ हम एक श्रृंखलाबद्ध विश्लेषण प्रारम्भ कर रहे हैं कि यह ज्ञान व्यक्तियों, परिवारों समाज और सरकारों को गरीबी उन्मूलन के लिए एक नवाचारी और प्रमाण–आधारित दिशा प्रदान करेगा। यदि हमारा देश अपने नागरिकों को उच्चकोटि की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पर्यावरणीय सुरक्षा और शांतिपूर्ण जीवन प्रदान करने में सफल होता है, तो यह व्यक्तिगत जीवन की गुणवत्ता को तो बढ़ाएगा ही साथ ही समाज के समग्र विकास को भी सुनिश्चित करेगा। इन मूलभूत कारकों को ध्यान रखकर तय की गई प्राथमिकता ही वह आधार है जिस पर एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण होता है।

इस विश्लेषण में हम आने वाले समय में यह स्पष्ट करेंगे कि कैसे शिक्षा नागरिकों को नई तकनीकें और विचार सीखने में मदद कर सकती है,स्वास्थ्य सेवाएं कैसे उन्हें अधिक उत्पादक बना सकती हैं, पर्यावरणीय संरक्षण कैसे संसाधनों की रक्षा कर सकता है, और शांति कैसे हमारे समाज को अधिक सहयोगी और सद्भावपूर्ण बना सकती है। हम उम्मीद करते हैं कि इस विश्लेषण के माध्यम से प्राप्त निष्कर्ष समाज और सरकारों को इन क्षेत्रों में नीतियाँ और कार्यक्रम विकसित करने के लिए प्रेरित करेंगे, जिससे गरीबी कम होने के साथ ही देश की समग्र प्रगति भी सुनिश्चित होगी।

हम इस श्रृंखलाबद्ध विश्लेषण को इस आशा और विश्वास के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं कि यह ज्ञान, गरीबी को मिटाने के लिए समाज और सरकारों को एक नई दिशा देगा। जब एक देश अपने बच्चों और नागरिकों को उच्चकोटि की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पर्यावरणीय सुरक्षा, और शांतिपूर्ण जीवन प्रदान करने में सफल होता है, तो यह न केवल व्यक्तिगत जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है बल्कि समाज के समग्र विकास को भी सुनिश्चित करता है। ये सभी तत्व एक समृद्ध समाज की नींव हैं और हर व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण हैं। इससे न केवल हमारे देश की समग्र उन्नति सुनिश्चित होगी, बल्कि यह हमारे नागरिकों को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी और सक्षम बनाने में भी मदद करेगा। यह आवश्यक है कि हम शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, और शांति के क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा दें और इन्हें अपनी राष्ट्रीय नीतियों का केंद्र बिंदु बनाएं। इस प्रकार, हम एक ऐसे भविष्य की ओर अग्रसर होंगे जहाँ हर नागरिक के पास अपनी पूर्ण क्षमता को प्राप्त करने का अवसर होगा।

हम इस बात को समझते हैं कि गरीबी एक जटिल समस्या है जिसका समाधान एक क्षेत्र में कार्य करने से नहीं, अपितु एक समन्वित और समठा दृष्टिकोण से ही हो सकता है। इसलिएहमारी श्रृंखला विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों के विचारों और अनुभवों को साझा करेगी, और शोध–आधारित विचारों को आगे लायेगी, जिससे नवाचार और सुधार के लिए प्रेरणा मिल सके। अंत में, हम आशा करते हैं कि यह श्रृंखला न केवल जागरूकता बढ़ाएगी बल्कि समाज और सरकारों को उन नीतियों और कार्यक्रमों को अपनाने के लिए प्रेरित करेगी जो वास्तव में गरीबी को कम करने और हमारे देश को एक समृद्ध भविष्य की ओर ले जाने में सहायक होंगे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंगप्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

एक राष्ट्र, एक चुनाव: नीतिगत स्थिरता और जनकल्याण की राह

डॉ. सौम्या गुर्जर

लोकतंत्र की जननी भारत को सशक्त बनाने वाले लोकमत के उत्सव यानी चुनाव की प्रक्रिया ही यह प्रश्न उठाती है कि क्या 145 करोड़ की आबादी वाला देश लगातार चुनावी मोड में रहकर विकास की स्थिर गति बनाए रख सकता है? चुनाव, निस्संदेह लोकतंत्र की आत्मा हैं, लेकिन जब वे वर्ष–दर–वर्ष किसी न किसी राज्य में दोहराए जाते रहते हैं, तो नीतियों की निरंतरता, प्रशासन की कार्यशीलता और योजनाओं के क्रियान्वयन की गति बाधित होती है। यही वह चुनौती है, जिसके समाधान के रूप में 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' का विचार सामने आया है।

यह अवधारणा कोई नया विचार नहीं है – स्वतंत्रता के बाद भारत में 1951–52 से लेकर 1967 तक लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव एक साथ आयोजित किए जाते रहे थे। लेकिन समय के साथ राजनीतिक अस्थिरता, राज्यों में राष्ट्रपति शासन लागू करने वाले अनुच्छेद 356 के दुरुपयोग, और लोकसभा के समय से पूर्व चुनाव कराने जैसे कारणों से यह क्रम टूट गया।

आज, जब भारत वैश्विक मंच पर अपनी भूमिका को पुनर्परिभाषित करते हुए 'विकसित भारत 2047' के लक्ष्य की ओर अग्रसर है, तब यह आवश्यक है कि राजनीतिक कैलेंडर राष्ट्रीय विकास के लक्ष्य के आड़े न आए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस विचार को पुन: राष्ट्रीय विमर्श में लाने का साहसिक कार्य किया। पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में गठित उच्चस्तरीय समिति इस विषय के संवैधानिक, व्यवहारिक और सामाजिक पहलुओं का समग्र अध्ययन कर रही है।

यह पहल न तो किसी एक दल की है, न ही किसी तात्कालिक राजनीतिक लाभ की – यह उस लोकतांत्रिक दृष्टिकोण का विस्तार है जो भारत को अधिक उत्तरदायी और परिणामोन्मुखी बनाना चाहता है। हालांकि कुछ दलों द्वारा इसे राजनीतिक दृष्टिकोण से देखा गया है, फिर भी इसका मूल उद्देश्य शासन व्यवस्था को अधिक सक्षम, स्थिर और जनकल्याणकारी बनाना है।

एक राष्ट्र एक चुनाव की नीति से मतदाता की भागीदारी में वृद्धि होगी, जो लोकतांत्रिक प्रक्रिया की मजबूती और उसकी वैधता को और अधिक सुदृढ़ बनाती है। नागरिकों को अपनी लोकतांत्रिक जिम्मेदारी निभाने का एक समान अवसर मिलेगा और भारतीय लोकतंत्र का उत्सव सभी वर्गों तक पहुंचेगा। प्रवासी मतदाताओं को भी बार–बार छुट्टी लेने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, क्योंकि मतदान का समय एक ही दिन होगा। यह भारतीय लोकतंत्र को और समावेशी और सहभागी बनाएगा।

लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराए जाने से आदर्श आचार संहिता की वजह से जो विकास कार्य रुकते हैं, वे बाधित नहीं होंगे। इससे शासन व्यवस्था को लगातार कार्य करने का अवसर मिलेगा और नीति–निर्माण की प्रक्रिया में कोई रुकावट नहीं आएगी।

चुनावों के दौरान अक्सर धारा 144 लागू की जाती है, ट्रैफिक प्रतिबंध होते हैं, और कुछ क्षेत्रों में दुकानें बंद रखने के निर्देश दिए जाते हैं। इससे आपूर्ति श्रृंखला प्रभावित होती है, सामानों की आवाजाही धीमी हो जाती है और उत्पादकता घटती है। एक राष्ट्र एक चुनाव की नीति उत्पादन और आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान को घटाने के साथ–साथ आर्थिक गतिविधियों को भी स्थिर करेगी।

चुनाव आचार संहिता के लागू होते ही नीतिगत निर्णयों, विकास योजनाओं और प्रशासनिक पहलों पर रोक लग जाती है, जिससे जनकल्याण से जुड़ी गतिविधियाँ प्रभावित होती हैं। इसके अतिरिक्त, राजनीतिक दलों और सरकारी अधिकारियों को चुनावी रणनीतियों और तैयारियों में बार–बार संलग्न होना पड़ता है, जिससे शासन पर केंद्रित ध्यान विखंडित हो जाता है। एक राष्ट्र, एक चुनाव की अवधारणा इस निरंतरता को तोड़ते हुए नीति–निर्माण को अधिक स्थिर और प्रभावी बना सकती है। जब देश भर में एक निर्धारित समय पर चुनाव आयोजित होंगे, तो सरकारों को शेष अवधि में नीतियों के क्रियान्वयन और विकास योजनाओं पर सुचारू रूप से कार्य करने का अवसर मिलेगा। इससे राजनीतिक कार्यकर्ताओं और सरकारी अमले का समय भी बचेगा, जो अक्सर चुनावी तैयारियों में व्यय होता है। साथ ही चुनावों के दौरान होने वाली सामाजिक असामंजस्यता और संघर्ष में भी कमी आएगी, क्योंकि चुनाव हर पांच साल में एक बार होंगे।

वित्तीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो वर्ष 2019 के आम चुनाव पर लगभग 55,000 करोड़ रुपये का व्यय हुआ था, और राज्यों के चुनावों को जोड़ने पर यह आंकड़ा सालाना 60,000 से 70,000 करोड़ रुपये तक पहुँचता है, जो भारत की उज्ञ्ञ का लगभग 0.3इ है। समवर्ती चुनावों से विशेषज्ञों का अनुमान है कि प्रत्येक चक्र में लगभग 40,000 करोड़ रुपये की बचत हो सकती है। यह केवल आर्थिक लाभ नहीं, बल्कि भारत के विकास में अभूतपूर्व गति ला सकता है।

राजनीतिक स्थिरता और वैश्विक छवि की बात करें तो, जब भारत के सभी चुनाव एक साथ होंगे, तो ग्लोबल पार्टनर्स और निवेशक भारत को एक स्थिर और परिपक्व लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में देखेंगे, जिससे अंतरराष्ट्रीय सहयोग और निवेश की संभावनाएं बढ़ेंगी।

इन सभी बदलावों के लिए संवैधानिक संशोधन, राजनीतिक सहमति और जनचर्चा की आवश्यकता होगी, लेकिन यदि इसे दलगत राजनीति से ऊपर उठकर देखा जाए, तो यह भारत के लोकतांत्रिक ढांचे को अधिक मजबूत और कार्यक्षम बना सकता है।

एक राष्ट्र, एक चुनाव की अवधारणा भारतीय जनता पार्टी के दीर्घकालिक दृष्टिकोण का हिस्सा रही है, जो समय–समय पर उनके घोषणापत्रों में भी परिलक्षित होती रही है। यह केवल वर्तमान की आवश्यकता नहीं, बल्कि स्वतंत्रता के बाद से चली आ रही एक विचार प्रक्रिया का परिणाम है, जिसका उद्देश्य देश की लोकतांत्रिक और विकासात्मक प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करना है। पार्टी ने अपने 1984, 2019 और 2024 के घोषणापत्रों में इस विचार को प्रमुखता से शामिल किया है।

आज भारत एक ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ा है, जहाँ उसे यह निर्णय लेना है कि क्या वह केवल लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का विस्तार चाहता है – या फिर उनमें दक्षता, स्थायित्व और समृद्धि भी लाना चाहता है। एक राष्ट्र, एक चुनाव कोई तात्कालिक प्रयोग नहीं, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक संगठित, उत्तरदायी और तेज़तर विकास देने वाला यथार्थ समाधान हो सकता है।

यह विचार समय की पुकार है – और जब राष्ट्र सामूहिक विवेक से जागता है, तो केवल चुनाव नहीं, इतिहास बदला जाता है।

–डॉ. सौम्या गुर्जर,
महापौर, नगर निगम ग्रेटर जयपुर

अंधड़ से प्रभावित व्यवस्थाओं की समीक्षा

झुंझुनूं, । गुरूवार–शुक्रवार के बीच मध्यरात्रि को आए अंधड़ से झुंझुनूं जिले में काफी नुकसान हुआ है। जिसे लेकर झुंझुनूं कलेक्टर रामावतार मीणा लगातार सक्रिय नजर आए। शुक्रवार सुबह ही जिला कलेक्टर रामावतार मीणा ने बिजली, पानी और राजस्व विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों को नुकसान का आंकलन और प्रभावित लोगों की समस्या समाधान के निर्देश दे दिए थे। शनिवार को इसी अंधड़ से हुए नुकसान को लेकर उन्होंने बिजली और पानी महकमों के अधिकारियों की बैठक बुलाई। शनिवार की छुट्टी होने के कारण जिला कलेक्टर रामावतार मीणा ने अपने सरकारी आवास पर ही अधिकारियों को बुलाया और सभी से एक–एक बिंदू पर जानकारी हासिल की। कलेक्टर ने कहा कि अंधड़ से अभी तक कोई जनहानि नहीं हुई है।

'मुफ्त खाद्यान्न उठाने वालों से होगी बाजार दर से वसूली'

अजमेर (कासं)। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग द्वारा गिव अप अभियान प्रारम्भ किया गया था। आशातीत सफलता को देखते हुए इस अभियान की अवधि को अब विभाग द्वारा 31 मई तक बढ़ा दी हैं।

- **आशातीत सफलता को देखते हुए अभियान की अवधि को अब विभाग ने 31 मई तक बढ़ा दी हैं।**

इन लोगों को एक अंतिम अवसर और प्रदान किया गया था। खाद्य सुरक्षा योजना की पात्रता खो चुके 1837 परिवारों के 6967 सदस्यों ने सरकार की प्रस्तावित कार्यवाही के डर से स्वेच्छा से अपने नाम हटवा लिए है।

इसके बाद कोई परिवार पात्रता नहीं रखने के बावजूद खाद्य सुरक्षा योजना का लाभ लेता है तो उस पर विभाग कार्यवाही के साथ ही 27 रूपये प्रति किलो गेंहू अथवा बाजार दर के हिसाब से वसूली की जाएगी।

जिला रसद अधिकारी (प्रथम) रतन कौर ने बताया कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना में अवैध रूप से लाभ लेने वाले लाभार्थियों के लिए गिव अप अभियान चलाया जा रहा है।

इसके तहत ऐसे व्यक्ति जिनके पास चार पहिया वाहन है, आयकर दाता है, ग्रामीण क्षेत्रों में 1500 स्क्वायर फीट से ज्यादा जमीन पर मकान बना हो और आर्थिक रूप से सक्षम है। इसके बाद भी खाद्य सुरक्षा योजना में अवैध रूप से लाभ उठा रहे है, तो उनके नाम काटे जा रहे है।

वे उपभोक्ता एवं परिवार स्वयं अभियान के तहत योजना से नाम कटवा सकते हैं। अवैध रूप से योजना का लाभ ले रहे लोगों को पर्याप्त समय दिया गया था। विभाग के पास सभी अपात्र परिवारों की सूची तैयार है। वे स्वयं अंतिम तिथि से पूर्व नाम नहीं हटवाते हैं, तो एक जून से विभागीय कार्यवाही शुरू की जाएगी। इसमें 27 रूपये प्रति किलो के हिसाब से वसूली की जाएगी। इस संबंध में सतर्कता समिति की बैठक के दौरान समस्त सतर्कता समिति के सदस्यों को निर्देशित किया गया कि ऐसे अपात्र व्यक्तियों का चिन्हिकरण करे, जो सक्षम होते हुए भी खाद्य सुरक्षा योजना का लाभ उठा रहे हैं। पात्र व्यक्तियों के नाम खाद्य सुरक्षा में जोड़ने हेतु नाम उपलब्ध कराए।

उनको खाद्य सुरक्षा में सम्मिलित किए जाने की कार्यवाही सुनिश्चित की जा सके। मीटिंग के दौरान समस्त प्रर्वतन अधिकारी तथा निरीक्षकों को निर्देश प्रदान किये गये कि वे अपने अपने क्षेत्र में ऐसे व्यक्तियों को चिन्हित कर नोटिस जारी करें। अब तक गिव–अप अभियान के तहत 220 अपात्र व्यक्तियों को नोटिस जारी किये जा चुके है। आज ही बड़गांव के 20 व्यक्तियों को नोटिस जारी हुए हैं। इनमें से 16 को एक लाख रुपए से अधिक आय होने, 3 को चार पहिया वाहन होने तथा एक को आयकर दाता होने के कारण नोटिस दिए गए हैं।

भारतीय संस्कृति व सनातन के ज्ञान से होगा मनुष्य में सद्भावना का निर्माण : खर्रा

- **वर्तमान दौर की आवश्यकता है गुरुकुल की शिक्षा : तिवाड़ी**
- **राम गुरुकुलम का भव्य शिलान्यास समारोह श्यामपुरा (पालवास) में सम्पन**

सीकर । निकटवर्ती गांव श्यामपुरा (पालवास) के मुलकानी तलाई में शनिवार को श्रीरामगुरूकुलम का शिलान्यास देशभर आये संतों के सानिध्य में हुवा। शिलान्यास समारोह में मुख्य अतिथि नगरीय विकास मंत्री झाबरसिंह खर्रा ने संबोधित करते हुये कहा कि भारतीय संस्कृति व नैतिक मूल्यों की समाज में स्थापना के लिये गुरूकुल शिक्षा की महती आवश्यकता है। बच्चा बचपन से ही अपने गौरवशाली इतिहास को पढ़कर गौरवान्वित महसुस करेगा तो देश व दूनिया में भारत का नाम रोशन करेगा। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार ने भी नई शिक्षा नीति में भारत के गौरवमयी इतिहास को शामिल किया है। जिससे हमें हमारे इतिहास के बारे में पता चल सकें। समारोह की अध्यक्षता करते हुये राज्यसभा सदस्य घनश्याम तिवाड़ी ने कहा कि वेदों की महत्वता व पुरातन गुरूकुल शिक्षा के बल पर ही भारत विश्वगुरू रहा है। भारतीय वेद, दर्शन व अंकशास्त्र की पूरे विश्व में पहचान रही है। श्रीराम गुरूकुलम न्यास के अध्यक्ष व पालवास के करणी गोपाल गौधाम के महंत चन्द्रमादास महाराज ने बताया कि शिलान्यास समारोह सुबह 9,15 बजे वैदिक मंत्रोंच्चार व गणेश वंदना से शुरू हुवा जो दोहपर 2 बजे तक चला। इस समारोह में अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के राष्ट्रीय प्रवक्ता व हनुमानगढ़ी अयोध्याधाम के महंत गौरीशंकर दास महाराज, श्री कृष्णायन गौशाला हरिद्वार के महामंडलेश्वर ईस्वर दास महाराज, श्रीधाम वृंदावन के सनतकुमार शरण महाराज, अखिल भारतीय सांगलिया धूणी सांगलिया पीठ के संत ओमदास महाराज व बावलिया बाबा आश्रम कुचामन सिटी के प्रकाश नारायण महाराज, ग्वाल सन्त गौऋषि गोपालानन्द सरस्वती महाराज, गाडोदा के संत महावीर जति, काछवा के मोतीनाथ,चूरू खासोली के नवरत्न गिरी महाराज, के उदबोधन हुये अन्य प्रदेश के कई संतो का सानिध्य मिला। कार्यक्रम में धोद विधायक गोवर्धन वर्मा, भाजपा नेता हरीराम रणवा, पूर्व विधायक रतन जलधारी, पूर्व सासंद सुमेधानन्द सरस्वती, भाजपा जिलाध्यक्ष मनोज बाटड एवं आरएसएस के प्रांत प्रचारक बाबूलाल, सहप्रान्त प्रचारक , विशाल कुमार, जिला संघचालक चितरंजन सिंह, सह प्रात कार्यवाह कृष्ण अडाणीया, वरिष्ठ प्रचारक सत्यनारायण सहित सैकड़ों राजनेता व गणमान्यजन उपस्थित रहे। समारोह में मुख्य भामाशाह ने किया नींव पूजन : श्रीराम गुरूकुलम के सचिव राजेन्द्र सिंह मूंडरू ने बताया कि शिलान्यास समारोह में जमीन दान करने वाले भामाशाह अजीत सिंह नाथावत ने संतो के सानिध्य में भूमि पूजन किया। समारोह में रामेश्वर जांगिड नागवा, चतुर्भुज कुमावत , विनोद अग्रवाल, दिनेस बियाणी, मुकेश खडेलिया . गोपाल डोलिया , भोजराज,मनमोहन शर्मा, वेदप्रकाश शर्मा ,गोपाल बड़ाडर, सुशीला सर्राफ, देवीलाल कुमावत ,रघुवीर सिंह नागवा, पुरुषोत्तम पाण्डेय ,महेंद्र लोहिया ,राजवीर सिंह शेखावत , मनोज कुमार शर्मा. भाजपा नेता हनुमान सिंह पालवास, मनमोहन मिश्रा, अमित चिराणियां, विष्णुभूत, सुरेश डीडवानिया,नरेश सिंधी,राजेश दोदराजका, श्रवण सिंह तासर छोटी, सुरेश गिनौडीया आदि भामाशाहो का सम्मान किया गया। पूर्व शिक्षा मंत्री एवं राज्यसभा सांसद घनश्याम तिवाडी ने कहा कि सभी वक्ताओं ने गुरुकुल शिक्षा को आज के दौर में जरूरी बताया कहा की आज की युवा पीढ़ी संस्कृति व संस्कारों से दूर होती जा रही है।

राशिफल रविवार 4 मई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, पुष्य नक्षत्र दिन 12:53 तक, गंड योग रात्रि 12:41 तक, वणिज करण प्रात: 7:19 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मेष, चन्द्रमा–कर्क मंगल–कर्क, बुध–मीन, गुरू–वृष, शुक्र–मीन, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

राजयोग सूर्योदय से प्रात: 7:19 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग और रविपुष्य योग सूर्योदय से दिन 12:53 तक है। आज भद्रा प्रात: 7:19 से सायं 7:27 तक रहेगी। आज भानु सप्तमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:29 से 9:07 तक, लाभ अमृत 9:07 से 12:24 तक, शुभ 2:02 से 3:42 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:50, सूर्यास्त 6:57

मेष

घर–परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। आज अनावश्यक धन खर्च हो सकता है।

वृष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये–पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मिथुन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

कर्क

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

सिंह

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कन्या

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

वृश्चिक

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे, अटका धन प्राप्त होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आज स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मकर

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।